मैस्लो (MASLOW)

* मैस्लो का सिद्धान्त (maslow theory)

या

* ए० एच० मैसलो का पदानुक्रम या सोपानीय अभिप्रेरणा का सिद्धान्त) (Hierarchical motivation theory of A.H maslow)।

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मैसलो ने सन् 1954-50 में किया। इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य व्यवहार उसकी आवश्यकताओं से प्रेरित होता है। साथ ही इस सिद्धान्त मैसलो ने आवश्यकताओं के पदानुक्रम या सोपान की एक पृथक धारणा का निरूपण किया जिसके अनुसार प्राणी की उच्च स्तरीय आवश्यकताओं को उद्दीपन करने के पहले यह अपेक्षित है कि उसकी निम्न स्तरीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट किया जाय। मैसलो ने आवश्यकताओं को एक विशेष क्रम (निम्न से उच्च की ओर) प्रस्तुत किया है। इस क्रम को निम्नांकित रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

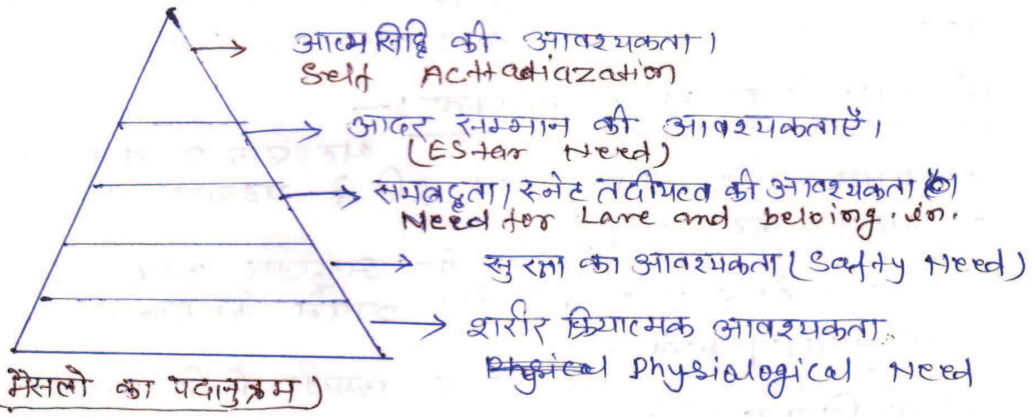

चित्र:- (मैसलो का पदानुक्रम)

उपरोक्त दिया हुआ रेखा चित्र एक विशेषप्रकार की आवश्यकता समिश्रण का द्योतक है। इसमें व्यक्ति की क्रियात्मक एवम् सुरक्षा संबंधित आवश्यकताएँ अधिक बलवती रूप में प्रदर्शित है। आत्म सिद्धि की आवश्यकताएँ के बलवती होने पर इस रेखा चित्र को उल्टे रूप में दिखाना पड़ता है।

* मैसलो द्वारा उल्लेखित इन पाँच प्रकार की आवश्यकताओं के बारे में संक्षिप्त व्याख्या आगे प्रस्तुत है ——

① शरीर क्रियात्मक आवश्यकता :—

प्रत्येक मनुष्य की भूख-प्यास नींद आदि की मूलभूत आवश्यकताएँ होती है। जिसकी आवश्यकता होने पर उसे तुरंत समाप्त या पुरा करना पड़ता है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के बिना वह प्राय इसके उपर के स्तर के आवश्यकता के प्राप्ति की बात ही नहीं सोच पाता है।

② सुरक्षा की आवश्यकता :—

मैसलो के अनुसार पहली आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात मनुष्य सुरक्षा की आवश्यकताओं (शारीरिक सुरक्षा जीवन में स्थिरता, बचाव, भय, चिंता आदि) की प्राप्ति की ओर बढ़ता है।

③ स्नेह तथा सम्बद्धता की आवश्यकता :—

ऊपर की दोनों आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् व्यक्ति में स्नेह की आवश्यकता जाग्रत होती है प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात व्यक्ति समाज में अपना स्थान बनाना चाहता है। जिसके लिए समाज के लोग से परस्पर प्रेम का आदान-प्रदान करता है उन्हे प्रेम देता है तथा उनसे भी प्रेम की प्राप्ति करना चाहता है। इस प्रकार व्यक्ति परिवार एवं समाज में प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त कर सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण करता है।

④ आदर सम्मान की आवश्यकता :—

सभी निम्न स्तर की आवश्यकताओं के पूर्ति के पश्चात् व्यक्ति में सम्मान की उच्च स्तरीय आवश्यकता जाग्रत होती है इसमें व्यक्ति समाज में आत्म सम्मान आकांक्षा करने लगता है तथा दूसरों के सम्मान पक्षों की आकांक्षा अभिप्रेरक का काम करती है। वह अपनी योग्यता अनुसार पद-प्रतिष्ठा तथा उसके आधार पर सम्मान चाहता है।

⑤ आत्म सिद्धि की आवश्यकता :—

यह एक उच्च स्तरीय आवश्यकता है प्रथम चारो अवस्था की पूर्ति के पश्चात् व्यक्ति इस आवश्यकता को महसूस करता है।

मैसलो के अनुसार आत्म सिद्धि की आवश्यकता का अर्थ है एक व्यक्ति को अपने इच्छानुसार कार्य सम्पन्न करना चाहिए। जैसे —

एक अगर आत्म सिद्धि चाहता है तो उसे कविता लिखना चाहिए।

अतः आत्म सिद्धि की आवश्यकताओं की सन्तुष्टी किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक है। अन्यथा वह ~~संतुष्ट~~ असन्तुष्ट और बैचैन ही रहेगा। अर्थात् व्यक्ति को वही करना चाहिए जो वह कर सकता है।

Q- विद्यालय में अनुशासन किस प्रकार किया जा सकता है? अपने-अपने मतो का उल्लेख करे।

Ans- विद्यालय में बढ़ती हुई छात्र अनुशासन हीनता के कारण सम्पूर्ण शिक्षा अवस्था प्रभावित हो रही है। इस प्रकार शिक्षक और प्रधानाचार्य से लेकर शिक्षा प्रशासन में लगे हुए सभी ~~प्रकार~~ व्यक्ति विद्यालयों में अनुशासन का समाप्त कर एक अनुशासित विद्यालय का रूप खड़ा करना चाहिए। जिसके अनुशासित के सकारात्मक साधनों पर ध्यान देना आवश्यक है जो निम्न प्रकार है।

① छात्रो का स्वशासन ② विद्यालय नियम परम्पराये और कार्य प्रभाव। ③ ग्राह्यतम प्रभावो का नियंत्रण। ④ विद्यालय का वातावरण एवं समान्य सुविधाओ। ⑤ शिक्षक अभिभावक सहयोग ⑥ विद्यालय का सामुहिक

① सम्पूर्ण बनाम खण्ड विधि :—

इस विधि में यह बात महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण विधि या खण्ड विधि से याद कर के स्मृति शक्ति बनायी जा सकती है। सम्पूर्ण विधि का अर्थ है कि सीखने वाली सामग्री को एक साथ याद कर लिया जाय। खण्ड विधि का तात्पर्य यह है कि उस वस्तु के विभिन्न खण्ड या भाग कर लिए जाय। तब उन्हें एक-एक खण्ड करके याद किया जाय। साधारणतः सम्पूर्ण विधि उत्तम मानी जाती है। एबलिंग ने 240 पंक्तियों के कविता को दोनो विधियों से याद करने में तुलना की है उसने सम्पूर्ण विधि को उत्तम पाया इस प्रकार खण्ड विधि कभी-कभी उस समय अत्यन्त लाभदायक होती है। जब याद करनेवाला अनुभवहीन व आत्म विश्वास नही हो अथवा याद करनेवाला विषय प्रतिकूल या जटील है।

② गहरी बनाम सतही विधि :—

इस तरह अधिगम एवं चिंतन विधि में छात्र किसी विषय का या तो अर्थ समझकर उसे सीखते है। इस विधि को गहरी विधि के अन्तर्गत रखते है। या फिर ऊपर-ऊपर सीखने के लिए दिया गया है। इस तरह से सीखते है तो इस विधि को गहरी विधि में रखते है। मारटोन, हाउनसेल, एन्टविस्तल 1984&D में किया गया अध्ययनो से यह स्पष्ट हुआ है कि जो छात्र सतही विधि में किसी पाठ को संप्रत्यात्मक ढाँचा में ढाल नही पाते है। वे पाठपूर्ण निष्क्रियरूप से सीखते है। तथा प्रायः सूचनाओं को रखकर याद करते है। दूसरी तरफ गहरी विधि वाले छात्र जो सीखते है उससे सक्रिय हो कर एक संरचनात्मक रूप देते है तथा जो सीखते है तथा स्मरण करते है अथवा उसमे अर्थ जोड़ते है। इस तरह गहरी विधि वाला छात्र अधिगम के प्रति एक रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते है।

* अधिगम और शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक।

अधिगम और शिक्षण प्रक्रिया में बालक का अधिगम कई प्रकार के कारकों से प्रभावित होता है।

1. शिक्षार्थी से संबंधित कारक।
2. शिक्षक से संबंधित कारण।
3. प्रक्रिया से संबंधित कारक।
4. विषय वस्तु से संबंधित कारक।
5. वातावरण से संबंधित कारक।

* अधिगम विधियों का प्रभाव / असर :—

अधिगम विधियों इस बात पर निर्भर करती है कि छात्र को किस विधि से सीखाया गया है। वास्तव में अधिगम की विधि जितनी उपयुक्त ~~होगी~~ होगी विषय वस्तु की स्मृति उतनी अच्छी होगी।

बुद्धि सामान्य अधिगम विधि कोई क्षमता नही होती अधिगम विधि से तात्पर्य अपनी क्षमताओं को विशेष ढंग से विशेष कर फायदे मंद ढंग से उपयोग करने के ढंग से होता है। ~~शिक्षक जिसे~~ सचमुच अधिगम विधि अधिगम तथा अध्ययन के प्रति अपनाया गया एक विशेष उपागम होता है शिक्षक जिसे अधिगम विधि कहा जाता है। ~~संज्ञानात्मक~~ मनोवैज्ञानिक द्वारा संज्ञानात्मक विधि कहा है। संज्ञानात्मक विधि का संबंध छात्रों द्वारा विशेष ढंग से चिंतन स्मरण प्रत्यक्षण समस्या समाधान तथा निर्णय प्रक्रिया से होता है जिससे अपनाकर वो किसी पाठ को सीखते है या किसी समस्या ~~समाधान~~ का समाधान करते है।

हमलोग अनेक प्रकार से अधिगम विधि का उपयोग करके अपने क्षमताओं का विशेष ढंग से उपयोग करते है। ताकि हमे उससे अधिक से अधिक ~~अधिक~~ फायदा हो सके। व्यक्तियों में आपस में इतनी विभिन्नता होती है शिक्षकों एवं मनोवैज्ञानिकों द्वारा सैकड़ो अधिगम विधि (अनुपालन) किया है। परन्तु हम यहाँ सिर्फ ~~इसे~~ ही अधिगम विधि का व्याख्या करेंगे। जिसका उपयोग छात्र एवं शिक्षक प्रायः कक्षा में करते है। ऐसी अधिगम विधि मोटे तौर पर निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है।

1. सम्पूर्ण बनाम खण्ड विधि।
2. गहरी बनाम सतही विधि।
3. पूर्ण बनाम वर्तमान अधिगम विधि।